



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter-4 Shalok-14 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय चार-श्लोक चौदह | PDF

अध्याय 4 – ज्ञान कर्म संन्यास योग श्लोक 14

श्रीभगवानुवाच ।

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ॥14॥

सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

कर्म मुझे बांध नहीं सकते और मुझे अपने कर्मों के फल की कोई इच्छा नहीं है। जो व्यक्ति मुझे इस प्रकार वास्तविक रूप में जानता है, वह भी कर्मों के बंधन में नहीं बंधता।

विस्तृत व्याख्या

भगवान श्रीकृष्ण कर्मों से बंधे नहीं हैं

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण कर्म और कर्मफल के गहरे रहस्य को समझाते हैं। सामान्य मनुष्य जब कोई कर्म करता है,



तो उसके परिणाम के प्रति उसकी इच्छा और आसक्ति उसे कर्मों के बंधन में डाल सकती है।

लेकिन भगवान श्रीकृष्ण के कर्म उन्हें किसी प्रकार से बांधते नहीं हैं। उनके कार्य किसी व्यक्तिगत स्वार्थ या लाभ की इच्छा से प्रेरित नहीं होते।

भगवान कर्म करते हुए भी कर्मों के परिणाम से पूर्ण रूप से मुक्त रहते हैं।

भगवान को कर्मफल की इच्छा नहीं है

भगवान कहते हैं—“न मे कर्मफले स्पृहा”, अर्थात् मुझे अपने कर्मों के फल की कोई इच्छा नहीं है।

भगवान को किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए कर्म करने की आवश्यकता नहीं है। वे अपनी दिव्य इच्छा और सृष्टि के कल्याण के लिए कार्य करते हैं।

उनके कर्म धर्म की स्थापना, अधर्म के विनाश और जीवों के मार्गदर्शन के लिए होते हैं। इसलिए उनके कर्मों में व्यक्तिगत स्वार्थ या फल की लालसा नहीं होती।

कर्म और कर्मबंधन का संबंध

कर्म का अर्थ केवल कार्य करना नहीं है, बल्कि उसके पीछे की भावना और इच्छा भी महत्वपूर्ण होती है।

जब मनुष्य किसी कर्म को फल की तीव्र इच्छा के साथ करता है, तो सफलता मिलने पर अहंकार और सुख तथा असफलता मिलने पर दुख और निराशा उत्पन्न हो सकती है।



इस प्रकार फल की आसक्ति मनुष्य को कर्मों के बंधन में बांध सकती है।

भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि कर्म करना समस्या नहीं है। कर्मफल के प्रति आसक्ति ही कर्मबंधन का प्रमुख कारण बनती है।

निष्काम कर्म का महत्व

यह श्लोक निष्काम कर्म की भावना को समझने का महत्वपूर्ण आधार है।

मनुष्य को अपने कर्तव्यों का ईमानदारी और पूरी निष्ठा से पालन करना चाहिए, लेकिन परिणाम के प्रति अत्यधिक आसक्त नहीं होना चाहिए।

जब व्यक्ति अपना कर्म सही भावना से करता है और उसके फल को भगवान को समर्पित करता है, तब धीरे-धीरे उसके भीतर की स्वार्थपूर्ण इच्छाएं और आसक्ति कम होने लगती हैं।

भगवान के दिव्य कर्म

भगवान श्रीकृष्ण संसार में अनेक दिव्य कार्य करते हैं, लेकिन वे उन कार्यों के परिणामों से प्रभावित नहीं होते।

उनके कर्म किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं होते। वे धर्म की रक्षा, अधर्म के विनाश और संसार के कल्याण के लिए कार्य करते हैं।

इसलिए भगवान के कर्म सामान्य जीवों के कर्मों की तरह बंधन उत्पन्न नहीं करते।



भगवान को जानने से कर्मबंधन से मुक्ति

भगवान कहते हैं कि जो व्यक्ति उन्हें इस सत्य के साथ जानता है, वह भी कर्मों से बंधता नहीं है।

यह केवल भगवान के बारे में जानकारी प्राप्त करना नहीं है, बल्कि उनके दिव्य स्वरूप और कर्म के सिद्धांत को सही रूप में समझना है।

जब व्यक्ति यह समझता है कि कर्म का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करना नहीं है, तब उसके कर्मों में निस्वार्थता और समर्पण की भावना विकसित होने लगती है।

Jnana Karma Sannyasa Yoga का अभ्यास

Jnana Karma Sannyasa Yoga हमें सिखाता है कि केवल कर्मों को छोड़ देना ही आध्यात्मिक मुक्ति का मार्ग नहीं है।

सच्चा त्याग कर्मों को छोड़ने में नहीं, बल्कि कर्मों के प्रति स्वार्थपूर्ण आसक्ति को छोड़ने में है।

व्यक्ति अपने कर्तव्यों को निभाते हुए भी अपने कर्मों के परिणाम को भगवान को समर्पित कर सकता है। इस प्रकार कर्म ज्ञान और आत्मिक उन्नति का साधन बन सकते हैं।

मुख्य बिंदु

- भगवान श्रीकृष्ण के कर्म उन्हें बांधते नहीं हैं।
- भगवान को अपने कर्मों के फल की कोई व्यक्तिगत इच्छा नहीं है।



- कर्मफल की आसक्ति मनुष्य को कर्मबंधन में डाल सकती है।
- निष्काम भाव से किया गया कर्म मन को शुद्ध करने में सहायक होता है।
- भगवान के कर्म किसी स्वार्थ या व्यक्तिगत लाभ से प्रेरित नहीं होते।
- भगवान धर्म की स्थापना और जीवों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं।
- कर्म करना बंधन का एकमात्र कारण नहीं है; कर्मफल के प्रति आसक्ति महत्वपूर्ण कारण है।
- भगवान के दिव्य कर्मों को समझना कर्मयोग को समझने में सहायता करता है।
- अपने कर्तव्यों को बिना स्वार्थ और अत्यधिक आसक्ति के करना आध्यात्मिक प्रगति में सहायक है।
- ज्ञान, निष्काम कर्म और समर्पण के द्वारा कर्मबंधन से मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक आध्यात्मिक जीवन के एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत को प्रस्तुत करता है—कर्म स्वयं बंधन का कारण नहीं है, बल्कि कर्मफल के प्रति स्वार्थपूर्ण आसक्ति मनुष्य को बंधन में डालती है।



भगवान श्रीकृष्ण कर्म करते हुए भी कर्मों के फल की इच्छा नहीं रखते। उनके कर्म दिव्य उद्देश्य से होते हैं, इसलिए वे कर्मों के परिणामों से प्रभावित नहीं होते।

मनुष्य इस सिद्धांत को अपने जीवन में अपनाकर कर्म करते हुए भी आंतरिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है। अपने कर्तव्यों से भागना आवश्यक नहीं है। इसके बजाय कर्म करने की भावना को बदलना आवश्यक है।

जब व्यक्ति सफलता और असफलता के प्रति अत्यधिक आसक्ति छोड़कर अपने कर्तव्य को ईमानदारी से करता है और उसके परिणाम को भगवान को समर्पित करता है, तब धीरे-धीरे मन कर्मफल की चिंता से मुक्त होने लगता है।

इस श्लोक का गहरा संदेश यह है कि सच्चा त्याग कर्मों को छोड़ना नहीं, बल्कि कर्मों के फल के प्रति स्वार्थपूर्ण आसक्ति को छोड़ना है। ज्ञान, निष्काम कर्म और भगवान के प्रति समर्पण के माध्यम से साधक कर्मबंधन से ऊपर उठकर आत्मज्ञान और मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

पदों का भावार्थ

श्रीभगवानुवाच – श्रीभगवान ने कहा

न – नहीं

माम् – मुझे

कर्माणि – कर्म

लिम्पन्ति – बांधते हैं, लिप्त करते हैं



न – न ही

मे – मेरे

कर्मफले – कर्म के फल में

स्पृहा – इच्छा, लालसा

इति – इस प्रकार

माम् – मुझे

यः – जो व्यक्ति

अभिजानाति – वास्तविक रूप से जानता है

कर्मभिः – कर्मों से

न – नहीं

सः – वह

बध्यते – बंधता है

श्लोक का संदेश

भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि वे कर्म करते हुए भी कर्मों के बंधन में नहीं आते, क्योंकि उन्हें अपने कर्मों के फल की कोई स्वार्थपूर्ण इच्छा नहीं है। जो व्यक्ति भगवान के इस दिव्य स्वरूप और कर्म के रहस्य को समझता है, वह भी कर्मों के बंधन से मुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

यह श्लोक हमें सिखाता है



कि अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा से करना चाहिए, लेकिन कर्मों के परिणाम के प्रति अत्यधिक आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। निष्काम कर्म, आत्मज्ञान और भगवान के प्रति समर्पण के माध्यम से मनुष्य कर्मबंधन से ऊपर उठकर आध्यात्मिक उन्नति, आत्मसाक्षात्कार और मुक्ति की ओर बढ़ सकता है।

RELATED ARTICLE



[Chapter-4 Shalok-12](#)



[Chapter-4 Shalok-13](#)



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

